तर्ज-है इसी में प्यार की आबरू

कर न सकेंगे अदा कभी,महबूब की मेहरबानियां
बढ़ती ही जाये हर घड़ी,बेशुमार ये निगेहबानियां

1-तेरी साहेबी बेमिसाल है,तेरा इश्क भी बेहिसाब है
बख्शा जो हमको हजूर ने,ये उनकी ही कद्रदानियां

2- तेरी हर रज़ा स्वीकार है,तुम हो मेरे एतबार है
जब चाहोगे कर लेंगे हम,अपने वतन की रवानियां

3- हमसे फना न हुआ गया,फुरमान पर न चला गया
कर लेते हैं फिर भी कबूल,ना देखते कुरबानियां

4- तेरे इश्क का हो दायरा,सिमटा रहे तन मन मेरा
है अजब सरूर भरा हुआ,तेरे इश्क की ये निशानियां

Nijanand App